Resource: मुख्य शब्द (Biblica)

Biblica Study Notes (Key Terms) © 2023 Biblica Inc. Released under CC BY-SA 4.0 license. Biblica Study Notes has been adapted in the following languages: Tok Pisin, Arabic (عربي), French (Français), Hindi (हिंदी), Indonesian (Bahasa Indonesia), Portuguese (Português), Russian (Русский), Spanish (Español), Swahili (Kiswahili), and Simplified Chinese (简体中文)from Biblica Study Notes © 2023 Biblica Inc. Released under CC BY-SA 4.0 license by Mission Mutual.

मुख्य शब्द (Biblica)

द

दक्षिणी राज्य

इस्राएल की भूमि और गोत्रों पर दाऊद के परिवार की वंशावली से राजाओं ने शासन किया। इसे यहूदा भी कहा जाता था। इसमें यहूदा और बिन्यामीन के गोत्र और अन्य गोत्रों के कुछ इस्राएली शामिल थे। दक्षिणी राज्य के महत्वपूर्ण शहर हेब्रोन, लाकीश और यरूशलेम थे। यरूशलेम राजधानी शहर था। दक्षिणी राज्य की शुरुआत तब हुई जब रहूबियाम ने दस गोत्रों पर अधिकार खो दिया। यह 586 ईसा पूर्व में समाप्त हो गया जब बाबुल ने यरूशलेम पर नियंत्रण कर लिया। बाबुल में निर्वासित होने के बाद दक्षिणी राज्य के कुछ लोग लौट आए। दक्षिणी राज्य के भविष्यवक्ताओं में योएल, यशायाह, मीका, सपन्याह, यिर्मयाह, हबक्कूक और यहेजकेल शामिल थे। राजा थे रहूबियाम, अबिय्याह, आसा, यहोशाफात, यहोराम, अहज्याह, अतल्याह(रानी), योआश, अमस्याह, उज्जियाह, योताम, आहाज, हिजकिय्याह, मनश्शे, आमोन, योशिय्याह, यहोआहाज, यहोयाकीम, यहोयाकीन और सिदकिय्याह। इन राजाओं में से केवल कुछ ही सीनै पहाड़ की वाचा के प्रति वफादार थे। इसमें आसा, यहोशापात, योआश, अमस्याह, उज्जियाह, योताम, हिजकिय्याह और योशिय्याह शामिल थे।

दनिय्येल

जब यहोयाकीम राजा था, तब दक्षिणी राज्य का एक युवा व्यक्ति। उसे यहूदा से बेबीलोन में रहने के लिए ले जाया गया। उसने कई बेबीलोनी और फारसी राजाओं की सेवा की एक बुद्धिमान व्यक्ति और राज्य अधिकारी के रूप में। उसे बेलतशस्सर भी कहा जाता था। वह एक नबी था और परमेश्वर ने उसे दर्शन और संदेश दिए। ये दानिय्येल की पुस्तक में दर्ज हैं।

दबोरा

इस्राएल के 12 न्यायों में से एक। वह एप्रैम के पहाड़ी क्षेत्र में एक भविष्यवक्ता थीं। उन्होंने इस्राएलियों की कठिन मामलों को सुलझाकर सेवा की। उन्होंने सिसेरा की सेना के खिलाफ हमले के लिए बराक को अगुवा नियुक्त किया। उनकी विजय के बारे में उनका गीत न्यायियों के अध्याय 5 में दर्ज है।

दमिश्क

इस्राएल की भूमि के उत्तर में राज्य की राजधानी। यह वर्तमान में सीरिया कहलाने वाले देश में है। कई वर्षों तक यह अरामियों का शहर था। यह यरूशलेम से लगभग 300 किमी उत्तर में है।

दया

किसी ऐसे व्यक्ति के प्रति कोमल प्रेम या मेहरबानी जो किसी तरह से संघर्ष कर रहा है। परमेश्वर लोगों के प्रति दया से भरपूर है और कई तरीकों से अपनी दयालुता दिखाता है। उनकी दया का सबसे बड़ा उदाहरण यह है कि वह लोगों के पापों को कैसे माफ कर देते हैं।

दर्शन

जब परमेश्वर मनुष्यों को स्वर्गीय दुनिया में कुछ दिखाते हैं (स्वर्गीय दुनिया)। परमेश्वर से आने वाले दर्शन हमेशा इस सच्चाई से मेल खाते हैं कि परमेश्वर कौन हैं। यह एक तरीका है जिससे परमेश्वर खुद को और अपनी योजनाओं को लोगों के सामने प्रकट करते हैं। वह लोगों के सामने प्रकट होता है और उन्हें कुछ दिखाता है कि वह कौन है। वह उन्हें दर्शन में कोई सन्देश भी दे सकता है।संदेश केवल उस व्यक्ति के लिए हो सकता है जिसने दर्शन देखा है। या परमेश्वर चाहते हैं कि वे संदेश को दूसरों के साथ साझा करें। परमेश्वर लोगों के सामने दर्शन में प्रकट होने के लिए स्वर्गदूतों को भी भेज सकते हैं। दर्शन सपनों के माध्यम से हो सकते हैं जब लोग सो रहे होते हैं। लोग परमेश्वर से आने वाले दर्शन को नहीं बना सकते। वे परमेश्वर कि ओर से उपहार होते हैं। कुछ दर्शन शैतान और बुरी आत्माओं से होते हैं। वे दर्शन हानिकारक होते हैं और परमेश्वर के बारे में सच्चाई नहीं दिखाते।कुछ लोग दर्शन का दिखावा करते हैं। वे ऐसा दूसरों को ऐसी शिक्षाओं से बरगलाने के लिए करते हैं जो सत्य नहीं हैं।

दलीला

एक पलिश्ती महिला जिससे शिमशोन प्रेम करता था। पलिश्ती अगुवों ने उसका उपयोग शिमशोन की अद्‌भुत शक्ति का रहस्य जानने के लिए किया। शिमशोन ने उसे तीन बार इसके बारे में झूठ बोला। लेकिन दलीला ने तब तक विनती की जब तक शिमशोन ने अंततः उसे सच्चाई नहीं बता दी। उसने शिमशोन को अगुवों को सौंपने के लिए उसे पैसे मिले।

दस आज्ञाएँ

पहला व्यवस्था जो परमेश्वर ने मूसा को सीनै पहाड़ पर दिए थे। परमेश्वर ने उन्हें पत्थर की पट्टिकाओं पर लिखा था। वे इस्राएल के लोगों के साथ परमेश्वर की वाचा के नियम थे। पुराने नियम के बाकी व्यवस्था उन्हीं पर आधारित थे। वे निर्गमन 20:3–17 और व्यवस्थाविवरण 5:7–21 में दर्ज हैं। (मूसा का व्यवस्था)

दस विपत्तियाँ

दस तरीकों से परमेश्वर ने फिरौन, मिस्र और मिस्र के झूठे देवताओं के खिलाफ फैसला सुनाया। वे परमेश्वर द्वारा मूसा और हारून के द्वारा दिखाए गए शक्तिशाली चिन्ह थे। इन चिन्हों ने फिरौन, इस्राएलियों और पृथ्वी को हर चीज़ पर परमेश्वर का अधिकार और शक्ति दिखाई। उन्होंने दिखाया कि परमेश्वर अपने लोगों की मदद करने के लिए अपने अधिकार और शक्ति का उपयोग करता है। विपत्तियाँ इस बात का हिस्सा थीं कि कैसे परमेश्वर ने अपने लोगों को मिस्र की गुलामी से बचाया। हर बार जब फिरौन ने इस्राएलियों को मिस्र छोड़ने से मना कर दिया तब परमेश्वर ने एक महामारी भेजी। विपत्तियों में पानी का खून में बदलना, मेंढक, मच्छर और मक्खियाँ शामिल थीं। उनमें मारे गए पशुधन और जानवरों और लोगों की त्वचा पर फोड़े शामिल थे। उनमें ओले, टिड्डियाँ और अँधेरा शामिल थे। आखिरी विपत्ती के दौरान, मिस्र के प्रत्येक परिवार में सबसे बड़े बेटे को मार दिया गया था। परमेश्वर ने इस्राएलियों को उन पीड़ाओं से बचाया जो विपत्तियाँ लायी थीं।

दसवाँ

इस्राएलियों को अपनी हर चीज़ का दसवाँ भाग परमेश्वर को अर्पित करना था। इसमें उनकी ज़मीन पर पैदा होने वाली हर चीज़ और उनके पशुधन शामिल थे। इससे उन्हें यह याद रखने में मदद मिलेगी कि सब कुछ परमेश्वर का है। इससे उन्हें यह याद रखने में मदद मिलेगी कि उनके पास जो कुछ भी है वह परमेश्वर का उपहार है। इससे उन्हें उस भूमि में आनंद से भरपूर होने में मदद मिलेगी जो परमेश्वर ने उन्हें दी है। उन्होंने याजकों और लेवियों को बाँटकर हर चीज़ का दसवाँ हिस्सा परमेश्वर को दिया। उन्होंने इसे गरीब और जरूरतमंद लोगों के साथ भी साझा किया। परमेश्वर को हर चीज का दसवां हिस्सा देने की प्रथा सैकड़ों वर्षों तक चली। इसे दशमांश देना भी कहा जाता है। कई मसीही अपने कलिसिया को दशमांश देते हैं। दशमांश उनके काम से पैदा होने वाली किसी भी चीज़ का हो सकता है, जिसमें धन भी शामिल है।

दाऊद

यिशे का पुत्र, जो यहूदा के गोत्र से था। वह रूत के परिवार से था। दाऊद जब युवा थे तब वह एक चरवाहा थे। उन्होंने परमेश्वर का निष्ठापूर्वक पालन किया और इस्राएल के सबसे प्रसिद्ध राजा बने। उन्होंने वाद्य यंत्र बजाए और गीत और कविताएँ लिखीं। वह परमेश्वर के प्रति निष्ठावान थे और केवल परमेश्वर की आराधना करते थे। उनके बाद के सभी राजाओं की तुलना उनसे की जाती थी। परमेश्वर ने दाऊद के साथ एक वाचा बांधी थी। (दाऊद के साथ वाचा)

दाऊद का पुत्र

यीशु के लिए एक नाम का उपयोग यह दिखाने के लिए किया गया कि वह इस्राएल का सच्चा राजा और मसीहा था। परमेश्वर ने राजा दाऊद से वादा किया था कि उसका राज्य हमेशा के लिए रहेगा।ऐसा इसलिए होगा क्योंकि उसके परिवार का ही कोई मसीहा होगा। यीशु दाऊद के परिवार से वादा किया गया शासक था।(दाऊद 1 शमूएल 16:1 – 17:58।)

दाऊद के साथ वाचा

परमेश्वर ने दुनिया को बचाने की अपनी योजना में दाऊद और उसके परिवार के माध्यम से काम करने का चयन किया। परमेश्वर ने दाऊद और उसके बाद पैदा हुए बेटों के साथ एक वाचा बनाकर यह दिखाया। परमेश्वर ने दाऊद के शासन को सुरक्षित बनाने और इस्राएलियों को शांति और विश्राम देने का वादा किया। परमेश्वर ने वादा किया कि दाऊद के परिवार से बेटे इस्राएल में राजा के रूप में शासन करेंगे। दाऊद और उसके बाद के बेटे सीने पर्वत कि वाचा के प्रति वफादार होने वाले थे। यदि वे वफादार होते, तो परमेश्वर दाऊद के परिवार से राज्य नहीं छीनते। वे हमेशा इस्राएलियों पर राजा बने रहते। परमेश्वर ने इस वाचा में कुछ और भी वादा किया। दाऊद के परिवार से एक बेटा हमेशा के लिए परमेश्वर के राज्य पर शासन करेगा। यह वादा दाऊद और उसके बाद के बेटों द्वारा किए गए किसी भी कार्य पर निर्भर नहीं था। यह उनके सीने

पर्वत कि वाचा के प्रति वफादार होने पर निर्भर नहीं था। पुराना नियम लेखकों ने समझा कि यह मसीहा के बारे में एक वादा था। नया नियम लेखकों ने समझा कि यह वादा यीशु में पूरा हुआ। (दाऊद)

दागोन

कनान और उसके आसपास के लोगों द्वारा उपासना कि जाने वाला एक झूठा देवता। इब्रानी भाषा में दागोन शब्द का अर्थ अनाज होता है। दागोन को बाल का पिता माना जाता था।

दान

याकूब और बिल्हा का सबसे बड़ा बेटा। इब्रानी भाषा में, दान नाम का अर्थ है उसने न्याय किया। उसका परिवार एक इस्राएली गोत्र बन गया। दान, दान गोत्र के मुख्य शहर का नाम भी था। यह हर्मोन पर्वत के पास था और इस्राएल के सबसे उत्तरी हिस्सों में से एक था।

दारा

फारस का एक राजा जिसे महान दारा या दारा १ भी कहा जाता था। परमेश्वर ने उसे एक उपकरण के रूप में इस्तेमाल किया। दारा ने यहूदियों को मंदिर का पुनर्निर्माण करने की अनुमति दी।

दिरबे

एशिया माइनर में गलातिया के रोमी क्षेत्र में एक शहर। पौलुस ने यीशु के बारे में सुसमाचार सुनने के लिए अपनी तीन यात्राओं में इसका दौरा किया। ऐसा माना जाता है कि पौलुस का गलातियों को पत्र यहाँ की कलीसिया में पढ़ा गया था।

दीना

याकूब और लिया की बेटी। उसके भाइयों लेवी और शमोन ने शेखेम को मार डाला जब उसने उसका बलात्कार किया।

दुष्टात्माएं

वो आत्माएं जिन्हें परमेश्वर ने बनाया लेकिन वो उनके खिलाफ हो गयी। इनमें शैतान, बुरी आत्माएं और वे स्वर्गदूत शामिल हैं जो परमेश्वर की सेवा नहीं करते। दुष्टात्माएं परमेश्वर के खिलाफ काम करती हैं। शैतान उनका अगुवा है। वे लोगों को नियंत्रित करने और उनके अंदर रहने के लिए अपनी शक्ति का उपयोग करते हैं। कई बार मनुष्य परमेश्वर के बजाय दुष्टात्माओं की उपासना और सेवा करते हैं। जब मनुष्य ऐसा करते हैं, तो वे पाप और मृत्यु की शक्ति के गुलाम बन जाते हैं। यीशु ने कई लोगों मे से दुष्टात्माओं को बाहर निकाला। वे उन लोगों के अंदर नहीं रह सकते या उन्हें नियंत्रित नहीं कर सकते जो यीशु पर विश्वास करते हैं और उनका अनुसरण करते हैं। पवित्र आत्मा यीशु के अनुयायियों को दुष्टात्माओं को बाहर निकालने की शक्ति देता है जैसे यीशु ने किया था। (शैतान)

दूसरी मौत

उन लोगों के खिलाफ परमेश्वर के अंतिम न्याय को समझाने का एक तरीका जो उसकी बात मानने से इनकार करते हैं। वे नष्ट हो जाते हैं और हमेशा के लिए परमेश्वर से अलग हो जाते हैं। यूहन्ना ने दूसरी मृत्यु होने वाले स्थान को एक आग की झील के रूप में वर्णन किया। इसे जलते हुए गंधक की झील भी कहा जाता था। जो लोग इसमें फेंके जाते थे, उनका पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य में कोई हिस्सा नहीं होगा।

दृष्टान्त

यीशु ने लोगों को परमेश्वर के मार्गों और परमेश्वर के राज्य को समझाने के लिए जो कहानियाँ सुनाईं। कहानियों में लोगों के वास्तविक जीवन की घटनाओं, स्थानों और कार्यों का उपयोग किया गया। इनमें आमतौर पर एक मुख्य बिंदु होता था।

देवर का कर्तव्य

सैकड़ों वर्षों से कई लोगों के समूहों में एक आम प्रथा। यह विधवा और मरने वाले व्यक्ति के परिवार की देखभाल करती है। मरने वाले व्यक्ति का भाई विधवा से शादी करता है और उसके साथ एक बच्चा पैदा करता है। बच्चे को मरने वाले व्यक्ति का बच्चा माना जाता है। यह बच्चा संपत्ति प्राप्त करता है और मरने वाले व्यक्ति का नाम आगे बढ़ाता है। जब माँ बूढ़ी हो जाती है तब यह बच्चा उसकी देखभाल करता है ।

दोषबली

बलिदान या भेंटें तब दी जाती थीं जब लोग परमेश्वर के प्रति अविश्वासी होते थे और अनजाने में पाप करते थे। ये तब भी दी जाती थीं जब लोग दूसरों के प्रति पाप करते थे। परमेश्वर ने

दोषबली

लोगों से ये बलिदान देने की मांग की। जब लोगों को एहसास होता था कि उन्होंने क्या गलत किया है, तो उन्हें रुकना पड़ता था। उन्हें परमेश्वर की ओर लौटना पड़ता था और उन पर विश्वास करना पड़ता था कि वह उन्हें माफ कर देंगे। वे इसे एक दोषबली देकर दिखाते थे। एक मेढ़े की बलि देना उस पाप का भुगतान करने का एक तरीका था जो व्यक्ति ने किया था। फिर दोषी व्यक्ति को जो उन्होंने लिया था उसे वापस करना पड़ता था। उन्हें उस व्यक्ति को अतिरिक्त भुगतान भी करना पड़ता था जिसे उन्होंने नुकसान पहुँचाया था। याजक दोषबली का एक हिस्सा जलाते थे। अन्य हिस्सों को वे पवित्र तंबू या मंदिर के आंगन के अंदर खाते थे।